© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
https://www.eurekajournals.com/shodh.html
ISSN: 2581-3501

डॉ. राममनोहर लोहिया का समाजवाद व मौलिक अधिकार दर्शन

डॉ. मनोहर लाल स्वामी[1]

[1]सहायक आचार्य राजनीतिशास्त्र, श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय, बॉसवाड़ा।

सारांश

डॉ. राममनोहर लोहिया आधुनिक भारत के ऐसे प्रतिभाशाली राजनीतिक विचारक थे जिन्होंने भारत के स्वाधीनता संग्राम और समाजवादी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने समाजवाद की नवीन व्याख्या भारत और एशिया की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के मद्देनजर की। लोहिया ने भारतीय समाज एवं राजनीति में सुधार की व्यापक योजना प्रस्तुत कर समाज को गतिशील बनाने का कार्य किया। उन्होंने भारतीय समाज के पतन के लिए सबसे जिम्मेदार जातिवाद एवं वर्णव्यवस्था को माना। उनका कहना था कि इन्होंने सम्पूर्ण समाज को खोखला कर दिया है। आर्थिक असमानता की खाई और गहरी एवं चैड़ी होती जा रही है, जिसके लिए कथित उच्च वर्ग एवं जाति के लिए जिम्मेदार है जिन्होंने समाज के अधिकांश लोगों को अपना दास बना रखा है। डॉ.लोहिया का कहना था कि जाति का आधार कार्य न होकर कर्म होना चाहिए। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दलितों के उत्थान में बिताया और मरते दम तक दलितों के न्याय एवं अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहे। डॉ. लोहिया को समाजवादी चिन्तक के रूप में जाना जाता है। उनका समाजवादी चिन्तन देश प्रेम तथा जन-कल्याण की भावना से ओत - प्रोत है । वे न तो माक्र्स से सहमत थे और न ही गांधी से उनके दर्शन में मौलिकता थी। उन्होंने भारत की पद्दलित एवं पिछड़ी जातियों को देखा। उनकी पीड़ाओं को महसूस किया। वह उनके कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो गये। इस तरह लोहिया ने समाजवादी समानता एवं सम्पन्नता के साथ जोड़कर व्यावहारिक रूप दिया। इस तरह डॉ लोहिया भारतीय समाज के अनुरूप समाजवाद की स्थापना करना चाहते थे।

मूल शब्दः डॉ.राममनोहर लोहिया, समाजवाद, मौलिक अधिकार।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

परिचय

राम मनोहर लोहिया का जन्म 10 अक्टूबर, 1910 को अकबरपुर (उत्तर प्रदेश के एक राष्ट्रवादी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम हीरालाल एवं माता का नाम चंदा था। लोहिया की प्रारम्भिक शिक्षा अकरबरपुर में सम्पन्न हुई।उसके पश्चात की शिक्षा बम्बई, कलकता, वाराणसी और बर्लिन के हुम्बर्ट विश्वविद्यालय में नमक और सत्याग्रह नामक शोध प्रबन्ध पर पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की। लोहिया के विद्यार्थी जीवन में अनेक संगठनों के साथ जुड़कर राष्ट्रवाद एवं स्वतंत्रता प्रेरित गतिविधियों का संचालन किया 1924 के गया कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार भाग लिया। 1928 के साइमन कमीशन के विरुद्ध चले आन्दोलन का भी नेतृत्व किया। 1934 में पं. नेहरू के साथ मिल कर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का निर्माण किया कांग्रेस पार्टी के अन्तर्गत एक पर राष्ट्र विभाग खोला गया, जिसका मंत्री डॉ. लोहिया को बनाया गया लेकिन 1939 में उन्होंने इस को त्याग दिया द्वितीय महायुद्ध के शुरू होने के समय डॉ. लोहिया के स्वतन्त्रता संग्राम को नवीन गोड़ किया ब्रिटिश सरकार ने उन राष्ट्र विरोधी गतिविधियां संचालित करने का आरोप लगा कर जेल भेज दिया देश की आजादी के पश्चात् डॉ. लोहिया के मतभेद कांग्रेस के नेताओं से और अधिक बढ़ने लगे। संविधान सभा, देश विभाजन भावी नीतियों को लेकर उनमें गम्भीर मतभेद पैदा हो गये थे डॉ लोहिया ने कई बार पं. नेहरू के विरुद्ध चुनाव लड़ा पर सफलता नहीं मिली। उन्होंने संसद के बाहर रहकर अंग्रेजी हटाओ, दाम बंधो जाति तोड़ो, हिमालय बचाओ आदि आन्दोलन का संचालन किया। 1963 में पहली बार अमरोहा निर्वाचन क्षेत्र में हुए उपचुनाव में विजय होकर लोकसभा में प्रविष्ट हुए। एक सांसद के रूप में उन्होंने गम्भीर एवं संवेदनशील मुद्दों को उठाया । उनका मूल उद्देश्य समता पर आधारित समाज की स्थापना करना और समाज को नवीन दिशा प्रदान करना था लेकिन इस लोह पुरुष का दिल्ली में 12 अक्टूबर 1967 को देहावसान हो गया ।

लोहिया के समाजवाद संबंधी दर्शन

समाजवाद को नवीन प्रकृति देने का प्रयास

स्वतन्त्र चिन्तक होने के कारण डॉ लोहिया समाजवाद को एक नई प्रकृति देना चाहते थे उन्होंने सन् 1950 में समाजवादियों के मद्रास सम्मेलन में कहा था कि अब समाजवाद को विभिन्न आदर्शों की जरूरत नहीं है। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि हम सामाजिक सच्चाईयों को समझा और उनकी समाजवादी मोड़ देने के लिए किसी की रूढ़ मान्यता से न बंधे रहे आज आवश्यकता इस बात की है कि नव स्फूर्त समाज की स्थापना की जाएं।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

समाजवाद को नवीन चिन्तन एवं कर्म की आवश्यकता

डॉ. लोहिया साम्यवादियों की इस बात को नहीं मानते थे कि पूँजीवाद की चरम सीमा से समाजवाद का उदय होगा । उनका कहना था कि समाजवाद को मूर्त रूप देने के लिए प्रयत्न करना होगा। नये तौर से व्यापक चिन्तन करना होगा । वे माक्र्सवादियों की इस बात को कारी मूर्खता कहते थे कि चिन्तन का कार्य माक्र्सकर चुका है और किसी नये चिन्तन की आवश्यकता नहीं है। वे कहते थे कि समाजवाद लाने के लिए निरन्तर चिन्तन और कर्म की आवश्यकता है।

लोकतंत्र एवं स्वतन्त्रता के लिए हित पोषक के रूप में

डॉ. लोहिया का प्रजातंत्र एवं स्वतंत्रता में अटूट विश्वास था। उन्होंने माक्र्सवाद का विरोध इसी आधार पर किया था, क्योंकि माक्र्स लोकतंत्र एवं स्वतन्त्रता को महत्व नहीं देता। वे कहते थे कि यदि कोई माक्र्सवाद पर चलेगा तो तानाशाही उसका एक तत्व अवश्य होगा। डॉ लोहिया व्यक्ति की स्वतन्त्रता के इतने बड़े समर्थक थे कि वे उसको किसी कीमत पर भी छोड़ना नहीं चाहते थे। व्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए यदि राज्य की सत्ता में कभी भी करनी पड़े तो उसके भी तैयार थे।

व्यावहारिकता पर बल

डॉ. लोहिया के समाजवादी चिंतन में व्यावहारिकता की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है यूरोप के समाजवादी लोगों ने जिस तरह का सिद्धान्तवादी समाजवाद माना है- डॉ . लोहिया उससे बिल्कुल सहमत नहीं है उसे वे रूढ़ समाजवाद कहते थे उनका मत था कि यूरोप के समजावादी चिन्तक अपने राष्ट्रों की समस्याओं से ही सम्बन्धित बातें में उलझे हु एहैं और समाजवाद के विश्व दर्श से दूर हैं। इस तरह उन्होंने ऐसे समाजवाद को अपनाने पर बल दिया जो हमारी परिस्थितियों के अनुकूल हो जिससे हमारी समस्याओं का समाधान हो सकें।

विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के समर्थक

डॉ. लोहिया पूजीवादी या समाजवादी उत्पादन तकनीकी को भारत के लिए ठीक नहीं समझते थे। उनका कहना था कि यहां के समाजवाद में जो भी उत्पादन की तकनीकी होगी वह इस बात पर आधारित होगी कि यहां पर कितने छोटो- छोटे खेते हैं, यहां की जनसंख्या कितनी है और यहां पर पूंजी कितनी है आदि। इसलिए डॉ. लोहिया विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के पक्षधर थे जो भारत और एशिया की विशेष आर्थिक दशा को सामने रखकर नियोजित की जाए।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

मौलिक अधिकार संबंधी दर्शन

डॉ. राम मनोहर लोहिया ने मौलिक अधिकारों पर विशेष बल दिया है। उनका तर्क है कि मौलिक अधिकारों के बिना व्यक्ति का सर्वागीण विकास सम्भव नहीं हो सकता। अतः मानव जीवन को संस्कृत एवं गौरवमय बनाने के लिए मौलिक अधिकारों का अनुमोदन किया, जो लोकतांत्रिक समाजवादी जीवन के अनिवार्य अंग है। उनकी राय में राज्य मौलिक अधिकारों को जन्म देने वाला न होकर केवल औचित्य प्रदान करने वाला होता है। डॉ. लोहिया के मौलिक अधिकार संबंधी विचार निम्न हैः-

बौद्धिक स्वतन्त्रता के अधिकार का समर्थन

डॉ लोहिया चिन्तन एवं अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता के पक्ष में थे डॉ . लोहिया समाजवादी होते हु ए बौद्धिक स्वतन्त्रता पर साम्यवादी देशों द्वारा लगाए गये अंकुश के कट्टर आलोचक थे। साम्यवादी व्यवस्था मनुष्य को मौलिक अधिकारों से वंचित रखती है। यह सम्पूर्ण मानव जाति के पतन का द्योतक है। इस प्रकार डॉ लोहिया ने 'वाणी स्वतन्त्रता और कर्म नियन्त्रण के सिद्धान्त द्वारा बौद्धिक स्वतन्त्रता का व्यापक अनुमोदन किया।

अत्याचारी एवं अन्यायी कानूनों का प्रतिरोध का अधिकार

डॉ लोहिया के अनुसार ये अधिकार सभी नागरिकों को प्राप्त होने चाहिए। लेकिन ऐसा अहिंसात्मक एवं शांतिमय ढंग से होना चाहिए। यही कारण है कि डॉ लोहिया ने सविनय अवज्ञा के अधिकार का समर्थन किया। वह इसे मौलिक अधिकार मानते हैं। उन्होंने एक और प्राण-दण्ड देने का विरोध किया तो दूसरी और आत्म हत्या के अधिकार का समर्थन किया। उनका मत है कि व्यक्ति आत्महत्या तब करता है , जब वह अपने जीवन से ऊब जाता है और उसके स्तर में गिरावट आ जाती है।

धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार

डॉ लोहिया धर्मनिरपेक्ष राज्य के समर्थन होने के कारण धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकार का पक्ष लेते थे। उनका मत था कि किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए और सभी को विकास के समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए। इसके अलावा नागरिकों को अपने धर्म का प्रचार करने, धार्मिक क्रया कलाप करने, धार्मिक संस्थाओं के संचालन करने आदि की पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

समता का अधिकार

भारतीय समाज में विद्यमान विषमताओं को समाप्त करने के लिए समता की भावना और व्यवहार को सर्वक्षत्रीय बअनाने में उन्होंने भारी योगदान दिया। डॉ लोहिया ने नर - नारी समता जाति उन्नमूलन, रंग भेद और छुआछुत की समाप्ति के न केवल सिद्धान्त तथा कर्म प्रस्तुत किये, बल्कि व्यापक रूप में स्वयं संघर्ष भी किया। उन्होंने वैधानिक, आर्थिक राजनीतिक तथा धार्मिक सभी क्षेत्रों में समानता के अधिकार का समर्थन किया। वह वैधानिक समता के तहत विधि के समक्ष समानता राजनीतिक समता के तहत भेदभाव रहित सार्वभौतिक मताधिकार, आर्थिक समता के अन्तर्गत समाजवाद की स्थापना और धार्मिक समता के अन्तर्गत धर्मनिरपेक्ष एवं सहिष्णुता की अवधारणा को अपनाने पर बल प्रदान करते हैं। इस प्रकार लोहिया ने न केवल मौलिक अधिकारों, अपितु समस्त मानवाधिकारों को सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक एवं धार्मिक विकास के लिए आवश्यक बतलाया। इनकी प्रगति से व्यक्ति एवं समाज जीवन उच्च तथा समृद्ध होगा।

निष्कर्ष

राममनोहर लोहिया के विचारों को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल माना जाता है। उनके विचारों का प्रमुख उद्देश्य भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करते हुए एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था का सूत्रपात करना, जो लोकतंत्र व समाजवाद पर आधारित हो तथा समाज के उस वर्ग के हितों का संरक्षण किया जाए जो शोषण एवं सामाजिक विषमताओं को लम्बे समय तक झेल रहा था। वे एक ऐसी अर्थव्यवस्था कायम करना चाहते थे जो विकेन्द्रीकरण पर आधारित हो तथा सभी की अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने का अवसर मिल सके।

- उनके समाजवाद का लक्ष समाज को व्यवस्थित रूप प्रदान करते हुए मूलभूत सामाजिक समस्याओं का समाधान।
- लोहिया के दार्शनिक विचार सामाजिक न्याय पर आधारित हैं।
- अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उनका मत था कि राष्ट्रों में पारस्परिक सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए एवं विश्व संसद की स्थापना की जानी चाहिए। इससे अन्तरराष्ट्रीय शांति को बढ़ावा मिलेगा।

संदर्भ सूची

डॉ. ब्रजकुमार पांडेय गिरीश मिश्र, डॉ. राममनोहर लोहिया व्यक्ति और विचार, दिल्ली, 2006.

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

लोहिया, मर्यादित, उन्मुक्त व्यक्तित्व और रामायण मेहता की संकल्पना, हैदराबाद 1969.

इतिहास चक्र, डॉ. राम मनोहर लोहिया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007.

शरद ओंकार (संपादक)-समता और संपन्नता डॉ. राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)-लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण: 1996.

शरण शंकर-विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011.

राममनोहर डा. लोहिया: इतिहास-चक्र लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,संस्करण: 1992.

लोहिया डॉ.राममनोहर-राममनोहर लोहिया-हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण: 2009.

त्रिपाठी अरविन्द-स्त्री मुक्ति: लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल-जून 2011.